16. पत्र-लेखन

पत्र या संदेश द्वारा दूर बैठे अपने रिश्तेदारों, मित्रों, सगे-संबंधियों आदि का हालचाल लिया-दिया जाता है। पत्रों द्वारा अपनी बात को विस्तार या संक्षेप दोनों ही रूप में लिखा जा सकता है। पत्र निजी रूप में यानि अपने मित्रों या परिवारवालों को भी लिखे जाते हैं तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य अथवा किसी कार्यालय से संबंधित किसी काम के संबंध में भी लिखे जाते हैं।

- ❖ पत्रों के बारे में चर्चा करते हुए बच्चों से पूछें, क्या उनके घर में किसी प्रकार के पत्र डाक द्वारा आते हैं अथवा घर से कोई कहीं किसी प्रकार का पत्र भेजता है। यदि हाँ, तो जानें क्या आपने कभी कोई पत्र पढ़ा है आदि बातचीत द्वारा बच्चों को प्राचीन काल से अब तक के पत्र व्यवहार के तरीकों तथा चलन के बारे में बताएँ।
- ❖ पत्र लिखना भी भाषा की एक विधा है जिसमें यदि शब्दों, वाक्यों, भावों के साथ रोचकता का मिश्रण हो तो पत्र लेखन एक कला बन जाता है।
- ❖ बच्चों को पत्र लिखते समय क्या-क्या विशेष बात ध्यान रखनी चाहिए, समझाएँ।
- ❖ पत्र का प्रारूप समझाएँ।
- ❖ पाठ में दिए पत्र बच्चों से पढ़वाएँ।
- ❖ अभ्यास के लिए दिए पत्र बच्चों से लिखने को कहें।
- ❖ प्रत्येक बच्चे पर ध्यान बनाए रखें। यथासंभव सहायता भी करें।